DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)

B.A. Part-III Public Administration Paper-V

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Lecture - 05 Date....10/09/2020

आदर्शवादी या लोककल्याणकारी दृष्टिकोण
(Idialistic or welfareview)

लोकप्रशासन के क्षेत्र के सम्बन्ध में आदर्शवादी या लोककल्याणकारी दृष्टिकोण। इस मान्यता पर आधारित है कि लोक कल्याण कारी राज्य को सफल बनाने में लोक प्रशासन का दायित्व ही सर्वोपरी है। अर्थात लोक कल्याणकारी व लोक प्रशासन में कोई अन्तर नही है। वास्तविकता तो यह है कि लोक कल्याण कारी राज्य में ही लोक प्रशासन को ज्यादा महत्व मिला है। लोक कल्याण कारी राज्य का उद्देश्य जनता की हित करना है। ठीक उसी प्रकार लोक प्रशासन का अर्थ जनता के हित में सरकार के कल्याकारी कार्यो को पुरा करना है।

लोकप्रशासन एक व्यापक विषय है। और इसके अन्तर्गत तमाम राजनितिक प्रक्रियायें, नीति निर्माण और उसके क्रियान्वयन को शामिल किया जाता है। आदर्शवादी दृष्टिकोण इसलिये भी आदर्शवादी है। कि इसके द्वारा एक बेहतर राज्य के लिये बेहत्तर लोक प्रशासन की बात की जाती है। आदर्शवादी उपागम इस मान्यता पर आधारित है कि लोकप्रशासन के अन्तर्गत मानव के औपचारिक अनौपचारिक व्यवहार भी सम्मिलित है। स्पष्टत: यह दृष्टिकोण काफी व्यापक है। इस दृष्टिकोण के समर्थक प्रो० L.D. white है। लोकप्रशासन के क्षेत्र के सम्बन्ध में उपर्युक्त चारों दृष्टिकोण के वर्णन एवं मूल्याकन से स्पष्ट है कि किसी एक दृष्टिकोण

P.T.O

Scanned with CamScanner

पूर्णतः सही मानना उचित नहीं है। और नहीं उस विकासोन्मुख विषय के क्षेत्र को सुनिश्चित किया जा सकता है। उपर्युक्त चारों दृष्टिकोणों में सत्य का अंश है। यानि लोकप्रशासन सरकार के तीनों अंगों से सम्बन्धित है। इसमें कार्यपालिका के कार्यकलापों पर जोर दिया जाता है। लोकप्रशासन के क्षेत्र के अन्तर्गत (Post Cold War) सिद्धान्त की तमाम बातें भी शामिल होती है। इसका स्वरूप व क्षेत्र आदर्शवादी भी हो सकता है। लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा के बाद लोकप्रशासन के क्षेत्र में आदर्शवादी मूल्यों की महत्ता में वृद्धि हुई है। और विगत वर्षों से चले आ रहे वैश्वीकरण ने लोकप्रशासन के क्षेत्र में अप्रत्याशित परिवर्तन किया है। अब तो लोकप्रशासन का क्षेत्र कभी घटता तो कभी बढ़ता दिखता है। साराँश में यही कहना ठीक है कि लोकप्रशासन एक सामाजिक विज्ञान है। जिसके अन्तर्गत प्रशासनिक क्रियाओं पर बल दिया जाता है। प्रशासनिक संरचना एवं प्रक्रियाओं के अन्तर्गत सार्वजनिक कार्मिक प्रशासन का अध्ययन, सार्वजनिक वित्तीय कार्यों का अध्ययन प्रशासनिक या संगठनात्मक सिद्धान्तों का अध्ययन, सार्वजनिक नीति का अध्ययन और तुलनात्मक लोकप्रशासन का अध्ययन आदि प्रमुख है।

(समाप्त)

Scanned with CamScanner